प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान (लघु)

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 500
ISBN-978-93-87891-07-4

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान

(लघु)

-रचयित्री-
जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

भगवान ऋषभदेव विश्वशांति वर्ष (2018-2019) के अन्तर्गत चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 63वीं पुण्यतिथि भादों शुक्ला दूज (11 सितम्बर 2018) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2544	मूल्य
1100 प्रतियाँ	भादों शुक्ला दूज, 11 सितम्बर 2018	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

गुरुभक्त्या वयं, सार्द्धद्वीपद्वितयवर्तिनः।
वन्दामहे त्रिसंख्योन-नवकोटिमुनीश्वरान्।।

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं। **'यथा नाम तथा गुण'** को धारण करने वाले आचार्यश्री का जीवन एक विलक्षण जीवन रहा है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, वर्तमान में पीछीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के 3 बार दर्शन किए। सन् 1954 में नीरा (महा.) में, सन् 1955 में बारामती में दर्शन किए एवं उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त किया। पुनः सन् 1955 में कुंथलगिरि में आचार्यश्री की सल्लेखना एवं वीरमरण देखा। पूज्य माताजी ने आचार्यश्री से आर्यिका दीक्षा देने के लिए कहा था लेकिन महाराज जी ने कहा कि हमने दीक्षा देने का त्याग कर दिया है अतः तुम मेरे प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण करना।

पूज्य माताजी के मुखारविंद से आचार्यश्री के गुणों को सुनकर एवं उनकी निर्दोष, निर्भीक चर्या को जानकर मन में बहुत ही आल्हाद होता है। पंचमकाल में चतुर्थकाल सम चर्या को दर्शाने वाले आचार्यश्री ने 35 वर्ष के मुनिदीक्षा काल में लगभग 26 वर्ष उपवास में व्यतीत किए। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ को ताड़पत्र से ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कराकर जिनवाणी का जीर्णोद्धार कराया। उनके उपकारों को दिगम्बर जैन समाज कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

इस बार ऋषभदेवपुरम् मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर दिव्यशक्ति भारतगौरव गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के सान्निध्य में दक्षिण भारत जैन सभा, वीर सेवा दल मध्यवर्ती समिति द्वारा परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की 63वीं पुण्यतिथि का महामहोत्सव भादों शु. दूज (11 सितम्बर 2018) को विशाल स्तर पर मनाया जा रहा है। पूज्य माताजी ने इस उपलक्ष्य में प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान (लघु) पुस्तिका तैयार की है। जिसका प्रकाशन वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के पुष्प रूप में किया जा रहा है। इस विधान को करके आप सभी अपने ज्ञान एवं चारित्र की वृद्धि करें, यही मंगल भावना है और पूज्य माताजी के दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकारत्न चंदनामती

महाकल्पवृक्षं महाचार्यरत्नं, कृपासागरं शांतिसज्ज्ञानमूर्तिम्।
गभीरं प्रसन्नं महाधीरवीरं, महातीर्थभक्तं सदा त्वां प्रवन्दे।।

जैनधर्म में मुख्य रूप से तीन रत्न माने गये हैं–देव, शास्त्र और गुरु। इन तीनों की उपासना करने से तीन रत्नों की-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की प्राप्ति होती है। देव, शास्त्र की महिमा का ज्ञान हमें गुरुजनों के माध्यम से होता है अतः गुरु की महिमा भी विशेष है। आचार्य ने कहा भी है–

गुरुभत्तिसंजमेण य, तरंति संसारसायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मणमरणं ण पावेंति।।

आचार्यश्री शांतिसागर महाराज ने बीसवीं सदी में जन्म लेकर मुनि परम्परा को पुनरुज्जीवित किया था और शांति के सागर बनकर समस्त प्राणियों को शांति का उपदेश प्रदान किया था। आज वर्तमान में हमें जितने भी मुनि-आचार्य आदि के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं, ये सब आचार्य शांतिसागर महाराज की कृपा प्रसाद का फल है। पूज्य माताजी के अद्भुत कार्यकलापों को देखकर यह सहज ही अनुमान लग जाता है कि जब उनकी शिष्या आज इतनी गुणवान, चारित्रवान एवं आगमनिष्ठ हैं, तो वे गुरु तो वास्तव में बहुत ही महान रहे होंगे।

पूज्य माताजी समय-समय पर आचार्यश्री के गुणानुवादरूप कुछ न कुछ लघु अथवा बृहत् साहित्य लिखकर समाज को प्रदान करती रहती है। इसी शृँखला में पूज्य माताजी ने **'प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान (लघु)'** लिखकर प्रदान किया है। इसमें आचार्यश्री शांतिसागर वंदना, श्री शांतिसागर पूजा, 28 मूलगुण का 1 अर्घ्य एवं आचार्य श्री के 36 गुणों के 36 अर्घ्य दिए हैं। 1 पूर्णार्घ्य, जयमाला एवं प्रशस्ति दी है।

पूजन के प्रारंभ में वंदना में पूज्य माताजी ने आचार्यदेव का जन्म से लेकर सल्लेखना पर्यंत जीवनवृत्त दिया है तथा जयमाला में उनके महिमामयी जीवन का वर्णन करते हुए उनके द्वारा किए गए व्रत, तप, स्वाध्याय एवं प्रभावनात्मक कार्यों का उल्लेख किया है। महापुरुषों के जीवन चरित्र का गुणगान करने से अवश्य मन में यह भावना आती है कि हम भी उन जैसा बनें। उन जैसा न बन सकें तो उनके चरणों की धूल बनकर उनके बताए मार्ग पर चलकर जिनधर्म का प्रचार-प्रसार करें।

'गुरूणांगुरु' आचार्य महाराज के 63वें पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में रचा गया यह लघु विधान सभी के जीवन में मंगलकारी हो। इन्हीं शब्दों के साथ आचार्य देव एवं पूज्य माताजी के चरणों में मेरा कोटि-कोटि नमन।

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान
(लघु)

-गणिनी ज्ञानमती

आचार्य श्री शांतिसागर वन्दना

–उपजाति छन्द –

सुरत्नत्रयैः सद्व्रतैर्भ्राजमानः। चतुःसंघनाथो गणीन्द्रो मुनीन्द्रः।।
महा-मोह-मल्लैक-जेता यतीन्द्रः। स्तुवे तं सुचारित्रचक्रीशसूरिम्।।1।

–दोहा –

शांतिसागराचार्य को, नमूँ नमूँ शत बार।
सम्यक् चारित प्राप्त हो, मिले स्वात्मनिधि सार।।1।।

–शंभु छंद –

दक्षिण भारत के भोजग्राम में, धर्मनिष्ठ श्रेष्ठी प्रसिद्ध।
पाटील भीमगौंडा उन भार्या-सत्यवती पतिव्रता सिद्ध।।
ईस्वी सन् अठरह सौ बाहत्तर, वदि अषाढ़ षष्ठी तिथि थी।
बालक ने जन्म लिया उस नाम-सातगोंडा था रखा तभी।।2।।

बचपन यौवन था धर्ममयी, वैराग्यभाव वृद्धिंगत थे।
उन्नीस शतक चौदह सन् में, सुदि ज्येष्ठ मास तेरस तिथि के।।
देवेन्द्रकीर्ति मुनि से उत्तूर-ग्राम में क्षुल्लक दीक्षा ली।
उन्नीस शतक बीस फाल्गुन सुदि-चौदस में मुनि दीक्षा ली।।3।।

देवेन्द्रकीर्ति गुरु से दीक्षित, मुनिराज दिगम्बर मान्य हुए।
समडोली पंचकल्याणक में, आचार्य सर्व प्राधान्य हुए।।

उन्निस सौ चौबिस ईस्वी सन्, चउविधसंघ के मुनिनाथ बने।
आगम अनुकूल विहित चर्या, कलियुग में भी शिवमार्ग बने।।4।।

ईस्वी सन् उन्निस सौ सैंतीस, गजपंथा सिद्धक्षेत्र सुंदर।
चारित्र चक्रवर्ती पद से, भूषित सब जग पूजित गुरुवर।।
पूरे भारत में भ्रमण किया, सब जिन तीर्थों की यात्रा की।
मुनि दीक्षा क्षुल्लक ऐलक औ, आर्यिका क्षुल्लिका दीक्षा दी।।5।।

शिष्यों को दीक्षा शिक्षा दे, मुनि परंपरा अक्षुण्ण किया।
ऐसे गुरुवर की शरणा ले, मैंने भी संयम लब्धि लिया।।
इस समय चतुर्विध संघ सर्व, इन गुरुवर तरु के फूल व फल।
संयमपथ निराबाध दिखता, इन गुरु की कृपादृष्टि का फल।।6।।

कुलभूषण देशभूषण प्रतिमा, कुंथलगिरि पर स्थापित कीं।
श्री सीमंधर आदिक प्रतिमा, दहिगांव क्षेत्र में स्थापित की।।
आचार्य प्रेरणा पा करके, कुंभोज आदि बहु तीर्थ बने।
बहु पंचकल्याण प्रतिष्ठाएं, बहु धर्मप्रभावक क्षेत्र बने।।7।।

षट्खंडागम धवलादि ग्रन्थ, श्रुतभक्ती से छपवाये हैं।
तांबे पर भी उत्कीर्ण करा, स्थायी ग्रंथ बनाये हैं।।
जिनदेवों की प्रतिमाओं की, अतिशायि प्रतिष्ठा करवायी।
जिन आगम को छपवा करके, जिन आगम रक्षा करवायी।।8।।

कुलभूषण देशभूषण मुनि ने, जहाँ पर निज आत्मा सिद्ध किया।
वहाँ पर ही प्रत्याख्यान मरण-विधि से तुम सल्लेखना लिया।।
ईस्वी सन् उन्निस सौ पचपन, भादों सुदि दूज तिथी आई।
'सिद्धाय नमः' जपते जपते, गुरुवर ने देवगती पाई।।9।।

हैं देव-शास्त्र-गुरु रत्न तीन, रत्नत्रय को देने वाले।
इनके सर्जक इनके वर्द्धक, इनकी भक्ती करने वाले।।
हे शांतिसागराचार्यप्रवर ! चारित्रचक्रवर्ती गुरुवर।
मैं भक्ति करूँ सज्ज्ञानमती, सह पाऊँ स्वात्म सौख्य सत्त्वर।।10।।

अथ गुरुपूजाविधानप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री शांतिसागराचार्य पूजा

–स्थापना –

तर्ज-मेरा नम्र प्रणाम है.....

वंदन शत शत बार है,
शांतिसागराचार्यवर्य को, वंदन शत शत बार है।
जिनकी चरण शरण लेने से, होते भवदधि पार हैं।।
शांतिसागराचार्यवर्य को.....।।
द्विविध रत्नत्रय धारण करके, वेष दिगंबर धारा था।
पिच्छि कमंडलु मात्र परिग्रह-धरा मोह को मारा था।।
विविध तपश्चर्या कर करके, भरा सुयश भंडार है।
शांतिसागराचार्यवर्य को, वंदन शत शत बार है।।1।।

आह्वानन स्थापन करके, गुरुवर का हम यजन करें।
हृदय कमल में आप विराजो, मोह तिमिर का हनन करें।।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक हम, करें भक्ति साकार है।
शांतिसागराचार्यवर्य को, वंदन शत शत बार है।।2।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिन्! श्रीशांतिसागराचार्यवर्य! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिन्! श्रीशांतिसागराचार्यवर्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिन्! श्रीशांतिसागराचार्यवर्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (चाल नंदीश्वर पूजा) –

सरयूनदि को जलस्वच्छ, कंचन भृंग भरूँ।
त्रयधारा देते चर्ण, भव भव त्रास हरूँ।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।1।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, गुरु के चरण जजूँ।
पाऊं निज अनुभव गंध, सूरी शरण भजूँ।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।2।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अति धवल अखंड, धोकर थाल भरूँ।
होवे मुझ ज्ञान अमंद, तुम ढिग पुँज धरूँ।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुलादि सुगंधित पुष्प, लाऊँ चुन चुन के।
पाऊँ निज समरस सौख्य, गुरु चरणों धरके।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।4।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू है मोतीचूर, अर्पूं तुम सन्मुख।
हो क्षुधा वेदनी दूर, पाऊँ आतम सुख।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।5।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
नशे मोहतिमिर का जाल, ज्योती प्रगटे ही।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।6।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध सुगंधित धूप, अग्नी में खेऊँ।
उड़ जावे चहुँ दिश धूम्र, तुम पद को सेवूँ।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।7।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम, फल से यजन करूँ।
हो निजपद में विश्राम, भव भव भ्रमण हरूँ।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।8।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ्य बनाय, रत्न मिलाऊँ मैं।
गुरुवर के चरण चढ़ाय, गुणमणि पाऊँ मैं।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।9।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद –

नीर गंगानदी का भरा भृंग में।
आपके पाद में तीन धारा करूँ।।
संघ में शांति हो सर्व बाधा टलें।
धर्म पीयूष मिल जाय गुरु भक्ति से।।10।।

शांतये शांतिधारा।

मल्लिका केवड़ा पुष्प सुरभित लिये।
आपके पाद पंकज चढ़ाऊँ अबे।।
सौख्य भंडार पूरो मिटें व्याधियां।
रत्नत्रय निधि मिले आश पूरो यही।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

-28 मूलगुण का अर्घ्य-

–शंभु छंद –

व्रत समिति इन्द्रिय वश आवश्यक पंच-पंच पण षट् मानो।
कचलोच अचेलक अस्नानं, क्षितिशयन अदंत धवन जानो।।
स्थिति भोजन इक भक्त सहित, अट्ठाइस गुण जो मूल कहें।
इन युक्त शांतिसागर गुरु को, हम पूजें भवदधि कूल लहें।।1।।

ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिसम्बन्धि-अष्टाविंशतिमूलगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य के 36 गुणों के 36 अर्घ्य

–सोरठा –

स्वयं आचारा नित्य, पंचाचार इसीलिए।
कहलाये आचार्य, पर को भी संयम दिया।।1।।

।।इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

-दोहा-

आठ भेद संयुत धरा, ज्ञानाचार महान्।
शांतिसागराचार्य को, पूजूँ श्रद्धाठान।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वभेदप्रभेदयुक्तज्ञानाचारगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

आठ अंग युत मोक्ष का, मूल दर्शनाचार।
इस गुणयुत आचार्य को, जजूँ भक्ति उरधार।।2।।

ॐ ह्रीं भेदप्रभेदसहितदर्शनाचारगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

तेरह भेद समेत है, शुभ चारित्राचार।
इस गुण भूषित सूरि थे, प्रणमूँ बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशभेदसमन्वितचारित्राचारगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

नाना विध तप को तपा, आतमशुद्धी हेतु।
तप आचारी सूरि को, पूजूँ भक्ति समेत।।4।।

ॐ ह्रीं नानाभेदप्रभेदयुक्ततप-आचारगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

पाँच भेद संयुत कहा, वीर्याचार विशेष।
इस गुण को धारण किया, पूजूँ तुम्हें हमेश।।5।।

ॐ ह्रीं पंचभेदसहितवीर्याचारगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

-अडिल्ल छंद-

क्रोध निमित्त मिला फिर भी समता धरा।
अंतरंग में क्षमाधार, सब कुछ सहा।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ कृपा तुम पायके।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमागुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

मृदुता गुण को धरा, मान शठ मारके।
भवि जन शरणा लिया, जगत से हार के।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

माया दुर्गतिसखी, त्याग आर्जव धरा।
मन वच तन को सरल, किया निज सुख लिया।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

अप्रिय कटुक कठोर, असत्य निवार के।
दशविध पाला सत्य, परमसुख हेतु ही।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

लोभ पाप का मूल, दूर से छोड़के।
परम शौच धर शिव से, नाता जोड़के।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

जीव दयाधर इन्द्रिय, का निग्रह किया।
द्वादशविध संयम धर, आतम सुख लिया।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।11।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

पर से इच्छा रोका, उत्तम तप किया,
निज आत्मा को निर्मल, कर निजसुख लिया।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।12।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

उत्तम त्याग किया, रत्नत्रय दान दें।
भव्यों को चउविध, दें दान उबारते।।

शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।13।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

किंचित् भी नहिं मम, यह आकिंचन्य है।
इस गुण से त्रिभुवनपति होते धन्य हैं।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।14।।

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्यधर्मसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ब्रह्मरूप निज आतम, में चर्या किया।
त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, गुण धारिया।।
शांतिसागराचार्य, जजूँ मन लायके।
रत्नत्रय निधि लहूँ, कृपा तुम पायके।।15।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

-नरेन्द्र छंद-

चतुराहार त्याग करके गुरु, बहु उपवास किया है।
बेलादिक से तप करते गुरु, जल भी नहीं ग्रहा है।।
अनशन तप से भूषित गुरु ने, कर्मेंधन को जलाया।
उनकी भक्ती पूजन करके, निज आतम बल पाया।।16।।

ॐ ह्रीं अनशनतपोगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

बत्तिस ग्रास पूर्ण भोजन में, एक ग्रास कम करना।
एक ग्रास लें एक सिक्थ[1] लें, जो भी हो कम करना।।

---

1. चावल।

अवमौदर्य किया तप गुरु ने, सभी प्रमाद नशाया।
उनकी भक्ती पूजन करके, आतम बल प्रगटाया।।17।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

चर्या समय वस्तु या घर का, नियम अटपटा करके।
यदि नहिं मिले रहें उपवासी, रंच खेद नहिं करते।।
वृत्तपरीसंख्या इस तप को, करके कर्म जलाया।
उनकी भक्ती पूजा करके, निज में ज्योति जलाया।।18।।

ॐ ह्रीं वृत्तपरिसंख्यानतपोगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

दूध दही घी नमक मधुर, रस सब त्यागा या कुछ को।
रसपरित्याग करन से प्रगटी, रस ऋद्धी भी उनको।।
फिर भी निज आतम अनुभव रस, अमृत स्वाद लिया था।
ऐसे गुरु की पूजा कर, हमने निज आत्म विकासा।।19।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपोगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

आर्त रौद्र दुर्ध्यान छोड़कर धर्म ध्यान करते थे।
अतः शुद्ध एकांत जगह, स्थान शयन करते थे।।
इस विविक्त शयनासन तप से, सब विकल्प परिहारा।
ऐसे सूरी की पूजा कर, हमने स्वात्म सुधारा।।20।।

ॐ ह्रीं विविक्तशयनासनतपोगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

नानाविध से आसन करके, तन में क्लेश बढ़ा था।
आतापन आदिक तप तपते, अतिशय योग बढ़ा था।।
सुखियापन तज कायक्लेश, तप करके कर्म सुखाया।
उनकी पूजा भक्ती कर, हमने भी कुछ बल पाया।।21।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपोगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

अतिक्रम व्यतिक्रम अतीचार औ अनाचार व्रत में जो।
अंतरंग तप प्रायश्चित्त से, शोधन सभी किया सो।।
गुरु के पास पाप शोधन कर, आतम शुद्ध किया है।
शांतिसागराचार्य यजन कर, हमने कर्म दहा है।।22।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपोगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

दर्शन ज्ञान चरित तप का जो, नितप्रति विनय किया है।
नित पंचम उपचार विनय से, गुरु में राग किया है।।
मोक्ष महल का द्वार खोलते, गुरुवर अति सुविधा से।
ऐसे सूरी की पूजा कर, निजपद पाऊँ तासे।।23।।

ॐ ह्रीं विनयतपोगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

सूरि पाठक साधू गण की, सेवा आदि करके।
सर्वशक्ति से संयतजन की, वैयावृत्ति करके।।
तीर्थंकर समपुण्य प्रकृति भी, संपादन कर लेते।
ऐसे सूरी की पूजा कर, भवजल को जल देते।।24।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यतपोगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

अर्हत् भाषित सूत्र ग्रंथ का, नित पठनादिक करते।
वाचन पृच्छन अनुप्रेक्षण, आम्नाय देशना करते।।
अंतस्तप स्वाध्याय पंच विध, करें करावें रुचि से।
ऐसे गुरुवर की पूजा कर, ज्ञान बढ़ाऊँ मुद से।।25।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

अंतर बाहर उपधि त्यागकर, तप व्युत्सर्ग धरा था।
आतम लीन सहज वैरागी, मन का मैल हरा था।।

इन तपधारी सूरीश्वर को, सुरपति शीश नमावें।
ऐसे सूरी की पूजा कर, संयम निधि हम पावें।।26।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

अशुभ ध्यान तज धर्म ध्यान धर, निज परिणाम संभारा।
शुक्ल ध्यान के हेतु निरंतर, ध्यानाभ्यास विचारा।।
चिच्चैतन्यसुधारस पीया, अजरामर पद हेतू।
ऐसे गुरु की पूजा करते, ध्यान सिद्धि के हेतू।।27।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपोधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

-रोला छंद-

जो इन्द्रिय के अवश, आवश्यक यह किरिया।
षट् भेदों में आदि, समता नामक चर्या।।
रागद्वेष में साम्य, सामायिक त्रय काले।
शांतिसागराचार्य, मैं पूजूँ त्रय काले।।28।।

ॐ ह्रीं समता-आवश्यकगुणपालकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

तीर्थंकर चौबीस, उनकी नामादिक से।
करना स्तवन विनीत, स्तव आवश्यक ये।।
करके आप सदैव, अतिशय पुण्य कमाया।
गुरु को अर्घ चढ़ाय, हम भी पाप नशाया।।29।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तव-आवश्यकगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

अर्हत् सिद्ध मुनीश, या उनकी हो प्रतिमा।
किन्हीं एक का नित्य, रुचिधर वंदन करना।।

आवश्यक सुखकार, वंदन नित्य किया है।
गुरु को अर्घ्य चढ़ाय, जीवन धन्य किया है।।30।।

ॐ ह्रीं वन्दना-आवश्यकगुणपरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

व्रत में हों जो दोष, प्रतिक्रमण से शोधें।
दैनिक रात्रिक आदि, विधि से मल को धोते।।
भूतकाल के दोष, गुरु ने दूर किया है।
तुमको अर्घ्य चढ़ाय, हम निज दोष हरा है।।31।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण-आवश्यकगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

भाविदोष कर त्याग, प्रत्याख्यान धरा था।
कर अहार तत्काल, चतुराहार तजा था।।
अथवा बहुविध वस्तु, या कुछ त्याग किया भी।
तुमको अर्घ चढ़ाय, हम निज पाप हरा ही।।32।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान-आवश्यकगुणपालकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

तन से ममत निवार, कायोत्सर्ग किया जो।
क्षण मुहूर्त या वर्ष, तक भी ध्यान धरा जो।।
गुरु आचार्य सदैव, भविजन को सुखदाता।
तुमको अर्घ्य चढ़ाय, मैं पूजूँ नत माथा।।33।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गा-आवश्यकगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

-सखी छंद-

त्रयगुप्ती में मनगुप्ती, जो अधिक कठिन से निभती।
मनरोध किया, शुभ माहीं, मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाहीं।।34।।

ॐ ह्रीं मनोबलवृद्धिंकराय मनोगुप्तिगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

बहि अंतर जल्प निवारा, अथवा नहिं अशुभ उचारा।
वचि गुप्ती धर सूरीश्वर, मैं पूजूँ धर्मरुचीधर।।35।।

ॐ ह्रीं वचनबलवृद्धिंकराय वचनगुप्तिगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

तन सुस्थिर ध्यान धरा था, या अशुभ क्रिया न किया था।
ये कायगुप्ति तुममें थी, हम पूजत पावें शक्ती।।36।।

ॐ ह्रीं कायबलवृद्धिंकराय कायगुप्तिगुणपरिणताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

-पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)-

ये पंचाचार धर्म दशविध, द्वादशविध तप को नित्य किया।
षट् आवश्यक त्रयगुप्ति सहित, छत्तिस गुण से तनु शुद्ध किया।।
तुम स्वयं तिरे तारा पर को, आचार्य प्रथम गुरु मान्य हुए।
उन सूरीश्वर की पूजा कर, आचार्यभक्ति मैं धरूँ हिये।।1।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसमन्विताय प्रथमाचार्य-श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने नमः।**

जयमाला

–दोहा –

शांतिसागराचार्यगुरु,मोक्षमार्ग के रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, पाऊँ स्वात्म स्वरूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय आचार्य शांतिसागर, अठबीस साधु गुण से मंडित।
जय जय चारित्र चक्रवर्ती, पाठक के पच्चिस गुण अन्वित।।
बीसवीं सदी के आप प्रथम, आचार्य दिगंबर हुए प्रथित।
शिष्यों का संग्रह किया अनुग्रह-निग्रह गुण से भी संयुत।।2।।

नाना विध तपश्चरण करके, अद्भुत महिमा पायी जग में।
इस युग में यद्यपि ऋद्धि न हों, फिर भी कुछ अंश दिखा तुममें।।
बहुतेक भव्य तुम भक्ती से, नाना विध कष्ट निवारे थे।
तुम चरणोदक मस्तक धरकर, कुष्ठादि रोग भी टारे थे।।3।।

सर्पादिक के उपसर्गों को, धीरज से सहन किया तुमने।
उपसर्ग आदि करने वाले, दुष्टों को क्षमा किया तुमने।।
पैंतिस वर्षों तक मुनी रहे, बहुविध उपवास किये तुमने।
साढ़े पचीस वर्षों की जो, गणना गायी विद्वत्गण ने।।4।।

चारित्र शुद्धिव्रत-बारह सौ, चौंतिस उपवास किये तुमने।
पुनरपि तीस चौबीसी व्रत, जो सात शतक बीस गिनने।।
शुभ कर्मदहनव्रत तीन बार, करके कर्मों को क्षीण किया।
तीर्थंकर प्रकृतिकारण षोडश-कारण व्रत[1] सोलह बार किया।।5।।

अति घोर सिंहनिष्क्रीडितव्रत, विधिवत् गुरु ने त्रयबार किये।
दशलक्षण आष्टान्हिक व्रत भी, उपवास विधी से पूर्ण किये।।
गुरुवर के सब नव हजार तीन सौ-अड़तिस दिन उपवासों में।
फिर भी शरीर में शक्ती थी, तुम कायबली सम थे जग में।।6।।

चारों अनुयोगों को पढ़कर, निज मनुज जन्म का सार लिया।
फिर समयसार पढ़कर आत्मा को, समयसारमय बना लिया।।
वर ग्रन्थ भगवती आराधन, छत्तीस बार पढ़कर तुमने।
स्वातम आराधन कर अंतिम, सुसमाधिमरण पाया तुमने।।7।।

इस दुषमकाल में हीन संहनन, धारी नर नारी मानें।
उनमें से एक आप ही तो, उत्तम शक्ती युत सब जानें।।
तीर्थों की तीर्थकरों की भी, भक्ती अतिशायी दिखलायी।
जिनआगम की भक्ती से तो, आगम भी हुआ अति स्थायी।।8।।

---

1. षोडशकारण के एक साथ 16 उपवास ऐसे सोलह बार किया।

गुरुओं की भक्ती स्वयं किया, बहुते मुनियों का सृजन किया।
इन देव शास्त्र गुरु भक्ती से, निज का रत्नत्रय शुद्ध किया।।
हे शांतिसागराचार्य वर्य! मैं नमूँ सहस्रों बार नमूँ।
चारित्रचक्रवर्तिन् गुरुवर! मैं निज रत्नत्रय हेतु नमूँ।।9।।

गुरु भक्ती से सम्यक्त्वरत्न, निर्दोष सुरक्षित अविचल हो।
गुरु भक्ती से सज्ज्ञानरत्न, निज भासे नित वृद्धिंगत हो।।
गुरु भक्ती से चारित्ररत्न, अंतिम क्षण तक मुझ साथ रहे।
गुरुभक्ती से तप आराधन, करने में उत्सुक चित्त रहे।।10।।

हे गुरुवर! तव प्रसाद से ही, श्रीवीरसागराचार्य मिले।
जिनके प्रसाद से रत्नत्रय का, लाभ मिला गुण पुष्प खिले।।
तब तक मन में गुरुभक्ति रहे, जब तक नहिं आत्मा सिद्ध बने।
कैवल्य 'ज्ञानमति' पाने तक, गुरुभक्ती भवदधि नाव बने।।11।।

–दोहा –

त्रिभुवन के भी पूज्य गुरु, जिनमुद्रा से वंद्य!
नमूँ नमूँ नत शीश कर, पाऊं परमानंद।।12।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यमहामुनीन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद –

जो भव्यजन श्री शांतिसागरसूरि की अर्चा करें।
वे शांतिप्रद चारित्रगुण से, स्वात्म की चर्चा करें।।
सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से निज, आत्मनिधि प्रगटित करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से, अज्ञानतम विघटित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

श्री महावीर तीर्थंकर को मैं, भक्तिभाव से नित्य नमूँ।
इस वर्तमान में जिनका वर-शासन प्रसिद्ध उनको प्रणमूँ।।
श्री सरस्वती माँ को वँदूं, जिनके प्रसाद से ज्ञान मिला।
गणधर गुरुओं को भी प्रणमूँ, गुरुभक्ती से मन कमल खिला।।1।।

श्री मूलसंघ में कुंदकुंद-आम्नाय सरस्वति गच्छ कहा।
विख्यात बलात्कार गण से, गुरु आम्नायों में मुख्य रहा।।
इसमें अगणित आचार्य हुए, उन सबको वंदन मेरा है।।
सब परम्परा आचार्यों को, नितप्रति अभिवंदन मेरा है।।2।।

चारित्र चक्रवर्ती प्रधान, आचार्य शान्तिसागर मानें।
आषाढ़ वदी छठ जन्मदिवस, मंगलकारी है सब जानें।।
उन जन्में इक सौ सैतालिस, वर्ष हुए उन गुरु को नमन।
उनकी त्रेसठवीं पुण्यतिथी, उन श्री गुरुवर को नित्य नमन।।3।।

मांगीतुंगी में ऋषभगिरी, पर्वत पर प्रभु को नित्य नमूँ।
इक सौ अठ फुट श्री ऋषभदेव, प्रतिमा को कोटि-कोटि वंदूँ।।
श्री पंचपरम परमेष्ठी में, आचार्य एक परमेष्ठी हैं।
इनका विधान, इनकी पूजा, जो करते सम्यग्दृष्टी हैं।।4।।

इन गुरु के पहले पट्टशिष्य, श्री वीरसागराचार्य प्रवर।
ये दीक्षागुरुवर मेरे हैं, इनका यश सदा रहे भू पर।।
मुझ अज्ञमती को ज्ञानमती, कर दिया आर्यिका व्रत देकर।
गंभीर-धीर-मितभाषी गुरु, मैं नमूँ नमूँ नित अंजलि कर।।5।।

जब तक श्री ऋषभदेव प्रतिमा, उनकी चर्चा हो इस भू पर।
तब तक श्री शांतिसागराचार्य, विधान करें सब भव्य प्रवर।।
वीराब्द पच्चीस शत चवालीस, श्रावण कृष्णा सप्तमी तिथी।
मैंने विधान यह पूर्ण किया, सब भव्य करो भर गुरु भक्ती।।6।।

।।इति श्री शांतिसागर पूजा-विधान प्रशस्ति समाप्ता।।

आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की आरती

धुन- नागिन.....

जय जय गुरुवर, हे सूरीश्वर, श्री शान्तिसिन्धु मुनिराज की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।
जग में महापुरुष युग का, परिवर्तन करने आते।
अपनी त्याग तपस्या से वे, नवजीवन भर जाते।।
गुरू जी नवजीवन.....
जग धन्य हुआ, तव जन्म हुआ, मुनि परम्परा साकार की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।
कलियुग में साक्षात् मोक्ष की, परम्परा नहिं मानी।
फिर भी शिव का मार्ग खुला है, जिस पर चलते ज्ञानी।।
गुरू जी जिस पर.....
मुनि पद पाया, पथ दिखलाया, चर्या पाली जिननाथ की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।
मुनि देवेन्द्रकीर्ति गुरुवर से, दीक्षा तुमने पाई।
भोज ग्राम माँ सत्यवती की, कीर्तिप्रभा फैलाई।।
गुरू जी कीर्तिप्रभा.....
हे शान्तिसिन्धु, हे विश्ववन्द्य, तव महिमा अपरम्पार थी
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।
परमेष्ठी आचार्य प्रथम तुम, इस युग के कहलाए।
सदियों सोई मानवता को, आप जगाने आए।।
गुरू जी आप.....
तपमूर्ति बने, कटुकर्म हने, उत्तम समाधि भी प्राप्त की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती के, चरणों में वन्दन है।
अहिविष भी ''चन्दनामती'', तव पास बना चन्दन है।।
गुरू जी.....
भव पार करो, कल्याण करो, मिल जावे बोधि समाधि भी,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज एवं परम्पराचार्यों के अर्घ्य

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी का अर्घ्य

दीक्षा लेकर बने शांति-सागर निज कर्म जलाने को।
कैसे होते हैं मुनिवर, यह बतला दिया जमाने को।।टेक.।।
साधु अवस्था धारण कर, क्रम-क्रम से श्रेणी बढ़ती है।
कर्म निर्जरा के बल पर, अरिहन्त अवस्था मिलती है।।1।।
गुरु चरणों में इसीलिए हम, आए अर्घ्य चढ़ाने को।
आए अर्घ्य चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागरमहामुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी का अर्घ्य

यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।
गुरु भक्ती ही कर सकती बस, दुर्गति का सहज निवारण है।।
आचार्य वीरसागर गुरु की, जो पूजा निशदिन करते हैं।
वे पूजक भी पुण्यास्रव कर, इक दिन अनर्घ्य पद वरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं प्रथमपट्टाचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर जी का अर्घ्य

तर्ज–जहाँ डाल-डाल पर.....

श्री शिवसागर आचार्य प्रवर के पद में शीश नमाएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।टेक.।।
महाराष्ट्र प्रान्त अड़गांव में जन्मे शिवसागर कहलाए।
श्री वीरसिन्धु आचार्यदेव के, प्रथम शिष्य कहलाए।।.....हाँ प्रथम.....

शिवपथ के राही परम तपस्वी शिवसागर कहलाए,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।1।।
बारह वर्षों तक परमेष्ठी आचार्य गुणों को पाला।
श्री महावीरजी में अपने नश्वर शरीर को त्यागा।। नश्वर.....
इनके तप की पूजा करके हम पूज्य परम पद पाएं,
हम अर्घ्य चढ़ाने आए।।2।।

ॐ ह्रीं द्वितीयपट्टाचार्यश्रीशिवसागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय पट्टाचार्य श्री धर्मसागर जी का अर्घ्य

तर्ज–माई रे माई.....

श्री आचार्य धर्मसागर के पद में शीश नमाया।
उनकी पूजा करने हेतु, स्वर्णिम थाल सजाया।।
गुरुवर की जय जय जय जय, मुनिवर की जय जय जय जय
शांति सिंधु की परम्परा में, पट्टाचार्य तृतिय ये।
संघ चतुर्विध के अधिनायक, भोले भाले गुरु थे।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भक्त समूह है आया
उनकी पूजन करने हेतू, स्वर्णिम थाल सजाया।।1।।
गुरुवर की जय जय जय जय, मुनिवर की जय जय जय जय।।1।।

ॐ ह्रीं तृतीयपट्टाचार्यश्रीधर्मसागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर जी का अर्घ्य

तर्ज–नागिन धुन.....

श्री चतुर्थ पट्टाचार्य प्रवर गुरु अजित सिन्धु मुनिराज को
हम सविनय अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
सन् उन्निस सौ पच्चिस में भौरा-आष्टा में जन्मे।
नाम राजमल पाया तुमने, त्यागी बनकर चमके।।गुरुजी.....

शिवसागर सूरि, से दीक्षा ले, बने अजित सिन्धु मुनिराज जी,
हम सविनय अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।
सन् उन्निस सौ सत्तासी में, पट्टाचार्य बने थे।
संघ चतुर्विध संचालन कर, धर्माचार्य बने थे।।गुरूजी.....
जल-चन्दन-अक्षत, आदि अष्ट द्रव्यों का थाल सजाय के,
हम सविनय अर्घ्य चढ़ाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्थपट्टाचार्यश्रीअजितसागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी का अर्घ्य

आवो हम सब करें अर्चना, पंचमपट्टाचार्य की।
श्री श्रेयांस सिन्धु की पूजन, चलो करें मिल आज ही।
वंदे गुरुवरं, वंदे गुरुवरं।।
जल चंदन अक्षत व पुष्प नैवेद्य दीप अरु धूप लिया।
फल युत अष्टद्रव्य को लेकर अर्घ्य समर्पित चरण किया।
रत्नत्रय की करें याचना, हम इस अर्घ्य के साथ ही।
श्री श्रेयांस सिन्धु की पूजन, चलो करें मिल आज ही।।
वंदे गुरुवरं, वंदे गुरुवरं।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमपट्टाचार्यश्रीश्रेयांससागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठ पट्टाचार्य श्री अभिनंदनसागर जी का अर्घ्य

तर्ज–जिन्दगी एक सफर है सुहाना.....
गुरूपद से है प्रीत लगाना, गुरु चरणों में अर्घ्य चढ़ाना।
जय हो जय हो जय हो जय-2
अभिनंदनसागर मुनिवर।
षष्ठम पट्टाचार्य प्रवर।।
उनकी भक्ति में मन को लगाना, गुरुचरणों में अर्घ्य चढ़ाना।।1।।

अष्ट द्रव्य का थाल लिया।
गुरुपद में नत भाल किया।।
है भाव रत्नत्रय पाना, गुरुचरणों में अर्घ्य चढ़ाना।।2।।

ॐ ह्रीं षष्ठपट्टाचार्यश्रीअभिनंदनसागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्तमान सप्तम पट्टाचार्य श्री अनेकान्तसागर महाराज का अर्घ्य

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले.....

पूजन कर लो गुरुवर की, गुरुवर की सूरीश्वर की।
श्री सप्तम पट्टाचार्य की, अनेकान्तसिन्धु आचार्य की।।टेक.।।
गोटेगांव के दीपक कुल दीपक बने।
शांति सिन्धु वंशावलि के शीर्षक बने।
अभिनन्दन सागर सूरि की देशना।
ज्ञानमती माताजी की मिली प्रेरणा।।
पूजन करो, अर्चन करो-2
श्री सप्तम पट्टाचार्य की, अनेकान्त सिन्धु आचार्य की।।
पूजन कर लो।।1।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजा कर ले लिया।
गुरु चरणों में अर्घ्य समर्पित कर दिया।।
युग-युग तक जीवन्त रहो आचार्यश्री।
परम्परा के सप्तम पट्टाचार्य जी।
पूजन करो, अर्चन करो-2
श्री सप्तम पट्टाचार्य की, अनेकांत सिन्धु आचार्य की।।
पूजन कर लो।।2।।

ॐ ह्रीं सप्तमपट्टाचार्यश्रीअनेकान्तसागरमुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज- चल दिया छोड़.....

श्री शांतिसिंधु मुनिराज, जगत सरताज, प्रथम ऋषिराजा
युग के मुनि मार्ग विधाता।।
थे भोजग्राम के राजकुंवर।
माँ सत्यवती के पुत्रप्रवर।।
जन्मे जग के कल्याण हेतु सुखदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।1।।
जैसे रवि तिमिर भगाता है।
जग में प्रकाश फैलाता है।
यूं ही मिथ्यात्व तिमिर नाशक गुरु गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।2।।
मुनि के दर्शन जब दुर्लभ थे।
देवेन्द्र कीर्ति इक गुरुवर थे।।
वे बने शांतिसागर मुनि के निर्माता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।3।।
मुनिचर्या तब जीवन्त हुई।
जिनवाणी सार्थक सिद्ध हुई।।
कलियुग भी सत्पुरुषों का जन्म प्रदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।4।।
है वर्तमान गौरवशाली।
उस एक वृक्ष की ही डाली।।
फल फूल रही वंशावलि गौरव गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।5।।
आचार्य प्रथम वे मान्य हुए।
युग में सबसे प्राधान्य हुए।।
उत्कृष्ट समाधीमरण से जोड़ा नाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।6।।
हम भी परोक्ष यशगान करें।
गुरुवर का मन में ध्यान करें।।
''चन्दनामती'' वन्दना करें नत माथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।7।।

भजन

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-तेरी दुनिया से दूर.....

गुरुवर शान्तीसागर, थे इस युग के रत्नाकर, उन्हें याद रखना।। टेक.।।

सुनते हैं जो इनकी, मुनिचर्या की कहानी, रोमाँच होता है।
रोमाँच होता है, मन में भान होता है।
उनके जैसा त्यागी, तपस्वी कोई मुनिवर, न प्राप्त होता है।
न प्राप्त होता है, न प्राप्त होता है।
थे वे ज्ञान के भण्डार, उनमें शांति थी अपार, उन्हें याद रखना।।1।।

बीसवीं सदी के, चारित्र चक्रवर्ती, श्री शान्तिसागर जी,
श्री शान्तिसागर जी, गुरुवर शान्तिसागर जी
मुनिपथ प्रदर्शक, आचार्य प्रथम थे वे, चउसंघ नायक जी,
चउसंघ नायक जी, गुरुवर मूलनायक जी।।
थे दश धर्मों के भण्डार, उनमें धैर्य था अपार, उन्हें याद रखना।।2।।

भादों सुदी दुतिया को, पुण्यतिथि उनकी, मनाते हैं सभी,
मनाते हैं सभी, उनको ध्याते हैं सभी।
उनकी स्मृतियों के, दर्पण में निज को, सजाते हैं सभी,
सजाते हैं सभी, निज को ध्याते हैं सभी।।
उनकी यादों का संसार, ''चन्दनामती'' भण्डार, उन्हें याद रखना।।3।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज- चल दिया छोड़.....

श्री शांतिसिंधु मुनिराज, जगत सरताज, प्रथम ऋषिराजा
युग के मुनि मार्ग विधाता।।
थे भोजग्राम के राजकुंवर।
माँ सत्यवती के पुत्रप्रवर।।
जन्मे जग के कल्याण हेतु सुखदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।1।।
जैसे रवि तिमिर भगाता है।
जग में प्रकाश फैलाता है।
यूं ही मिथ्यात्व तिमिर नाशक गुरु गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।2।।
मुनि के दर्शन जब दुर्लभ थे।
देवेन्द्र कीर्ति इक गुरुवर थे।।
वे बने शांतिसागर मुनि के निर्माता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।3।।
मुनिचर्या तब जीवन्त हुई।
जिनवाणी सार्थक सिद्ध हुई।।
कलियुग भी सत्पुरुषों का जन्म प्रदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।4।।
है वर्तमान गौरवशाली।
उस एक वृक्ष की ही डाली।।
फल फूल रही वंशावलि गौरव गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।5।।
आचार्य प्रथम वे मान्य हुए।
युग में सबसे प्राधान्य हुए।।
उत्कृष्ट समाधीमरण से जोड़ा नाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।6।।
हम भी परोक्ष यशगान करें।
गुरुवर का मन में ध्यान करें।।
''चन्दनामती'' वन्दना करें नत माथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।7।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–मैं चंदन बनकर.....

इस युग के पहले गुरुवर, हैं शांतीसागर जी।
इस युग के पहले मुनिवर हैं, शांतीसागर जी।। इस...।। टेक.।।

दक्षिण भारत कर्नाटक, में जनम हुआ था इनका।
माँ सत्यवती के नंदन, श्री शांतीसागर जी।।1।।

देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से, क्षुल्लक अरु मुनि दीक्षा ली।
आचार्य प्रथम कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।2।।

मूलाचारादिक पढ़कर, मुनिचर्या बतलाई थी।
गुरुओं के गुरु कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।3।।

धवला आदिक ग्रंथों का, भी जीर्णोद्धार कराया।
उपसर्गजयी कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।4।।

''चन्दनामती'' उन गुरुवर, को कोटी कोटि नमन है।
वे शीघ्र मोक्षपद पाएं, श्री शांतीसागर जी।।5।।